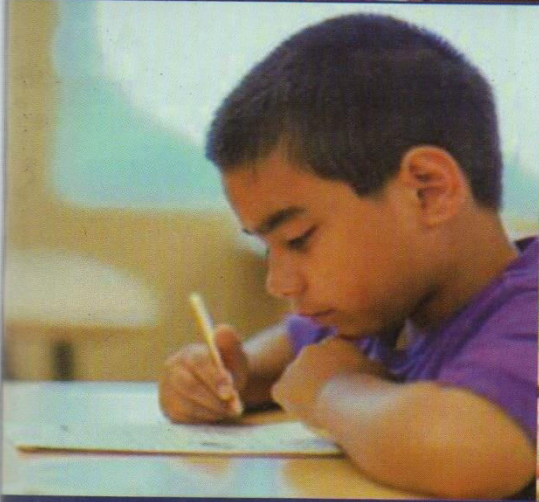
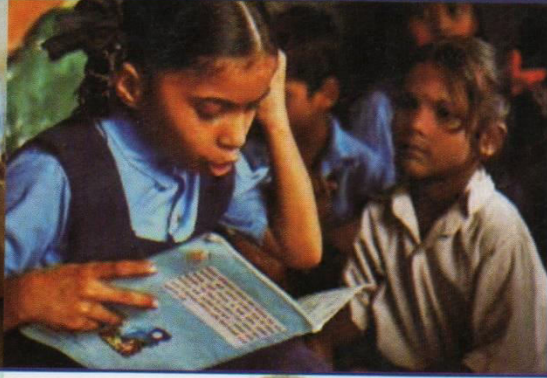
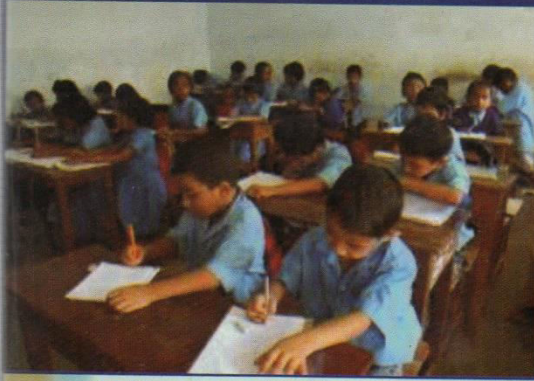


सर्वशिक्षा अभियान के आयाम



डॉ. बृजेश कुमार पाण्डेय

प्रस्तु
आयाम' वि
पढ़े गये अ
किया गया
एक दीप ज
है जो अज्ञा
खत्म कर
सर्वशिक्षा
महत्वपूर्ण
आठ देशों
से पार क
आवश्यक
भोजन जैस
की संख्या
विद्यालय
उल्लेखनीय
सर्वाभौमिक
लक्ष्य में ह
शिक्षा, शि
अभिप्रेरणा
भर्ती की
बालिकाओं
अलावा नि
जो बच्चों
अभियान क
जब इस अ
देखने को न

© लेखक/संपादक
प्रथम संस्करण : 2016
ISBN : 978-81-7487-987-5

ISBN 81-7487-987-0



9 788174 879875

राधा पब्लिकेशन्स

4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002

फोन: 23247003, 23254306

Email : radhpublications@rediffmail.com

Website : www.radhpublications.com

श्री नितिन गर्ग द्वारा राधा पब्लिकेशन्स के लिए प्रकाशित तथा
एशियन ऑफसेट प्रिंटर्स, मौजपुर, शाहदरा, दिल्ली में मुद्रित।

अनुक्रम

- 1 उत्तर प्रदेश में प्राथमिक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान की समीक्षा
प्रो.आर.पी.पाठक/डॉ. अमिता पाण्डेय भारद्वाज 104
- 2 Use of Training Experiences In Parishadiya Schools Under SSA- An Analytic Study
Dr. Sushma Pandey/ Surabhi Mishra 81
- 3 सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों का दृष्टिकोण
डॉ. सुंजीत कुमार/अखिलेश यादव 16
- 4 गोरखपुर जनपद में सर्व शिक्षा अभियान की प्रगति
डॉ. रमेशधर द्विवेदी 20
- 5 Addressing Gender Issues In Sarva Shiksha Abhiyan (SSA)
Dr. Deepti Johri 33
- 6 सर्व शिक्षा अभियान के दस वर्ष
डॉ. आदित्य कुमार चौबे 41
- 7 सर्वशिक्षा अभियान की संरचना एक अवलोकन
डॉ. अमित कुमार राय 48
- 8 सर्वशिक्षा अभियान : समन्वय की आवश्यकता
अंजू पाण्डेय 56
- 9 सर्व शिक्षा अभियान और शिक्षा का अधिकार कानून
डॉ. राम पाण्डेय 61
- 10 Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya :
An Effective Mode of SSA For Girl Education
Dr. Rashmi Singh 65

प्रस्तु
आयाम' रि
पढ़े गये अ
किया गया
एक दीप उ
है जो अज्ञ
खत्म कर
सर्वशिक्षा
महत्वपूर्ण
आठ देशों
से पार व
आवश्यक
भोजन जै
की संख्या
विद्यालय
उल्लेखनीय
सर्वाभूमि
लक्ष्य में
शिक्षा, शि
अभिप्रेरण
भर्ती की
बालिकाएं
अलावा नि
जो बच्चों
अभियान
जब इस
देखने को

सर्व शिक्षा अभियान के प्रति प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों का दृष्टिकोण

*डॉ. सुजीत कु

**अखिलेश या

शिक्षा अंधकार में उस प्रकाश की तरह है जो मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शित करती है। मनुष्य में अन्तर्निहित शक्तियों के सम्यक्, प्राकृतिक, सुसन्त तथा उत्तरोत्तर विकास का नाम ही शिक्षा है। शिक्षा का सम्बन्ध भले ही व्यक्ति हो, पर समाज और संस्कृति ही उसका आधार व साध्य होते हैं।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुष्य को जन्मजात शक्तियों के सामंजस्य और स्वाभाविक विकास में योग देती है। उसकी वैयक्तिकता का पूर्ण विकास करती है। उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों और दायित्वों के लिए तैयार करती है और उसके आचार-विचार व दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करती है कि समाज, देश और विश्व के लिये हितकर होती है।

शिक्षा व्यक्ति के विचार, व्यवहार और स्वभाव में स्थायी परिवर्तन लाता यह एक गतिशील प्रक्रिया है। इसकी गतिशीलता निरन्तर बनाये रखने को शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

विद्यार्थी राष्ट्र व देश की सम्पत्ति और भावी कर्णधार होते हैं, उनका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक आदि गुणों का निर्माण विकास का उत्तरदायित्व शिक्षकों पर होता है। शिक्षाशास्त्रियों ने अब एक नए युग में यह बात स्वीकार की है कि नवयुग में शिक्षा से साक्षरता तो बढ़ती ही रहेगी, किन्तु चरित्र-निष्ठा और भाव संवेदना युक्त व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षा का काम है।